Institute of Infrastructure, Technology, Research and Management

जो पोषण सबका करती है,
हर प्राणी का भार उठाती है,
प्रथम नमन इस मिट्टी को,
जो अन्न जल जीवन देती है।

शीश मुकुट हिमालय का,
सागर चरण पखारे हैं,
भुजबल पूरब पश्चिम हैं,
यमुना, गंगा, सिन्धु के धारे हैं।

थार पठार करें सुशोभित,
पर्वतमालाओं के किनारे हैं,
छह ऋतुएँ जिसका श्रृंगार करें,
वन सघन केश संवारे हैं।

हम फूल तेरे बगीचे के,
तेरे ही गुण गाते हैं,
देवभूमि हे भारत माँ !
हम तुझको शीश नवाते हैं।

कुसंस्कारों का मर्दन कर,
मर्यादित मानव समाज रहे,
ममतादीप रहे प्रज्ज्वलित,
भारत वर्ष अखंड रहे।

शुभ दृष्टि रहे परम ईश्वर की,
प्राकृतिक आपदाएं दूर रहें,
भारत माँ के धानी आँचल पर,
तिरंगे की हमेशा छाँव रहे।

नैतिकता का पालन कर,
सद्चरित्र निर्माण करें,
धरा प्रकाशित करें ज्ञान से,
जन-मन ऊर्जा संचार करें।

भूमि वायु जल ध्वनि न प्रदुषित हो,
ऐसी चुनौती स्वीकार करें,
शोध आविष्कार और अन्वेषण,
नव तकनीकों का विस्तार करें।

आत्मनिर्भर रहें स्वावलंबी बनें,
नित विकसित नये अवसर करें,
निज मातृभूमि पर रहकर ही,
अपनी क्षमतायों को समृद्ध करें।

करते रहें उद्योग निरंतर,
बाधायों का विध्वंश करें,
उन्नत भारत करने को,
प्रतिभा पलायन अवरुद्ध करें ।

तन स्वच्छ करें, मन स्वच्छ करें,
शुद्ध बुद्धि स्वच्छ विचार करें,
नैतिक मूल्यों की सुरक्षा हित,
धन और जीवन स्वच्छ करें ।

जल स्वच्छ करें, वायु स्वच्छ करें,
वातावरण को शुद्ध करें,
निश्चय करें हम मिलजुलकर,
भारत का कोना कोना स्वच्छ करें ।

अवसाद विषाद का जहर रुके,
मन उमंग प्रवाहित हो,
ध्येय साधना प्रबुद्ध हो इतनी,
रोम रोम उत्साहित हो ।

त्याग, तपस्या, तेज, गुण प्रखर,
संचित बुद्धि समृद्धि हो,
राष्ट्रीय गौरव रहे शीर्ष पर,
कर्मो की ऐसी बुलंदी हो ।

पराक्रम की पराकाष्ठा,
दस दिशायों में व्याप्त रहे,
तन मन धन प्राण समर्पित राष्ट्र को,
परिधान बसंती रंगा रहे ।

अवनि से लेकर अम्बर तक.
नित लहराता हुआ तिरंगा रहे,
देवभूमि हे भारत माँ ! शौर्य तेरा अमर रहे ।
देवभूमि हे भारत माँ ! शौर्य तेरा अमर रहे ।

जो भारत माँ की आन सँवार रहे,
तिरंगे की शान बढ़ा रहे,
'ममता' का नमन उन वीरों को,
जिनके बल 'हम' राष्ट्रीय पर्व मना रहे ।

Dr. Mamta Sharma
Assistant Professor
Civil Engineering Department
IITRAM, Ahmedabad